दिनांक 09-02-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा विश्व-परिवर्तन कैसे?

अनुभव करना हर पल खुद को अशरीरी आत्मा
शरीर से कर्म करवाने वाली शक्तिशाली आत्मा

अपनी ही कर्मेन्द्रियों के मालिक तुम बन जाओ
जब चाहो कर्म कराओ चाहो तो न्यारे हो जाओ

राजयोग की सिद्धि कर्मेन्द्रियों का राजा बनाती
कर्मेन्द्रियों की वशीभूत मालिक नहीं बन पाती

मास्टर सर्वशक्तिमान का पक्का निश्चय बिठाओ
निश्चय की स्मृति स्वरूप से विजयन्ति कहलाओ

आत्म स्मृति के मार्ग पर निरन्तर चलते जाओ
विजय होने के फॉउण्डेशन को मजबूत बनाओ

मंजिल दिखने की प्रतीक्षा में समय नहीं गंवाओ
निरन्तर चलकर अपनी विजय की मंजिल पाओ

मिली हुई ये गॉडली लॉटरी पूरी काम में लगाओ
खुशी और शक्ति का अविनाशी अनुभव पाओ

बहुत काल की प्रालब्ध अगर चाहते हो बनाना
पुरुषार्थ भी बच्चों बहुत काल तक करते जाना

मार्ग में आने वाले साइड सीन में ना खो जाना
अपनी बुद्धि केवल मंजिल पर जाने में लगाना

बाप समान विश्व परिवर्तन के निमित्त बन जाओ
इसके लिए तुम स्वयं का परिवर्तन करते जाओ

बाप समान सर्व शक्तियां अपने अन्दर जगाओ
बाप सेवा और ज्ञान के प्रति स्नेही बनते जाओ